जातरा

(श्री नरेन्द्र मोदी की सृजनात्मक रश्मियाँ)

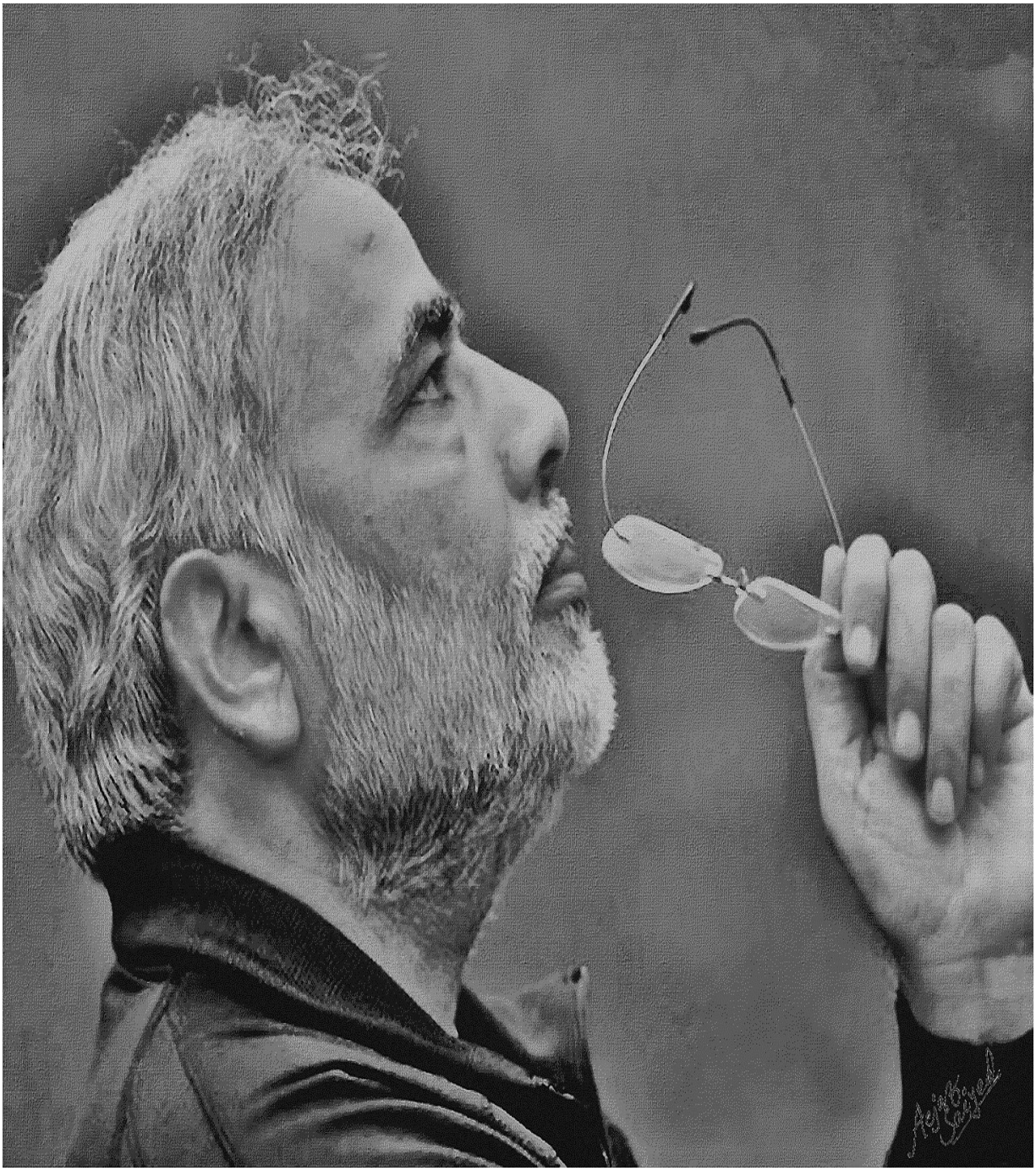

अनुवाद

प्रो. कल्पना पुरोहित

डॉ. रणजीत सिंह चौहान

मायड़ भासा

रा

हेताळुवां

नै

समरपित

म्हारे गुजरात नै प्रेम करो

बौ म्हारी आत्मा !

(श्री नरेन्द्र मोदी)

सम्पादकीय

प्रकृति के मातृत्वभाव, अटूट देशभक्ति, देश और जनता के प्रति अथाह प्रेम से अनुगुंजित मोदी जी की ये बाते उनके व्यक्तित्व को और मुखरित रूप देने वाली कविताएँ उनके जीवन को एक विशिष्ट आयाम देती हुई उन्हें एक सशक्त नेता, प्रशासक ही नहीं वरन् आध्यात्मिक साधक एवं हृदय से अत्यन्त संवेदनशील व्यक्ति की झलक देती है। सामान्य पृष्ठभूमि से होते हुए श्री नरेन्द्र मोदी जी देश के लिए आशा और सपनों के प्रतीक बने। उनका दृढ़–विश्वास, अनुशासित परिश्रम, विलक्षण राजनीति पूरी दुनिया के लिए मिसाल है। लेकिन इनकी कविताओं को पढ़कर, उनकी दुनिया में डूबकर अहसास हुआ कि अन्तः करण में यह कितने संवेदनशील, भावनाओं और श्रेष्ठ विचारों से परिपूर्ण व्यक्ति है।

मूलरूप से गुजराती भाषा में सृजित, ये काव्य रश्मियाँ हिन्दी, अंग्रेजी, उड़िया, तेलगू और अन्य भाषाओं में अनुदित हो चुकी है। जब मुझे इन सुंदर कविताओं को राजस्थानी भाषा में अनुवाद करने को डॉ. सुभाष नायक (उड़ीसा) ने कहा तो संकोच और झिझक के साथ मैंने हामी भरी क्योंकि मैं मूलरूप से अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य की विद्यार्थी हूँ किन्तु निज भाषा का अभिमान एवं मरुधरा मातृभूमि के प्रति श्रद्धा के कारण और दूसरी ओर मोदी जी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर मैं पूरे मनोयोग से जुट गई। इस यात्रा में मेरा साथ दिया डॉ. रणजीत सिंह चौहान, राजस्थानी विभाग से जिन्होंने अपने परिश्रम और निष्ठा से इस सृजन को एक रूप दिया। मैं आभारी हूँ। ये कविताएँ अनेकों भावनाओं, नौ रसों से परिपूर्ण, विभिन्न कल्पनाओं का सुंदर विशिष्ट गुलदस्ता है जिसकी खुशबू से मन और आत्मा प्रफुल्लित हो जाती है। मैंने हिन्दी और अंग्रेजी दोनों संग्रह पढ़े और कुछ कविताएँ मेरे मन में प्रतिध्वनित होती रही। जैसे–विलाप, ऊष्मा का अभाव, एकाध आँसू, प्रभुकृपा, तस्वीर के उस पार, पारदर्शक, प्रेम, वंदे मातरम्, समन्वय, संकल्प और अन्य।

अनुवाद का कार्य 'दूसरी देह में प्रवेश' के समान है। हमने मोदी जी के मनोभावों और संवेदनाओं को समझने और प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उनकी कविताएँ उनके व्यक्तित्व का आईना है।

एक प्रधानमंत्री और देश के सबसे बड़े लोकतंत्र के नेता होने की वजह से भाषा या वक्तव्यों की सीमा होती है किन्तु एक कवि के रूप में सभी सीमाओं के बंधनों से परे मोदी जी की कविताएँ एक अलग भाषा बोलती हैं। जो मानव जाति के लिए पथ–प्रदर्शक है और पूर्णतः अविस्मरणीय है। यह मेरा परम सौभाग्य है कि इस रचनात्मक हवन में, मैं आहुति दे सकी।

प्रो. कल्पना पुरोहित

विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

kalpana.p1410@gmail.com

म्हारी बात

म्हैं साहित्यकार या कवि नीं

अणूती सूं अणूती पिछाण

सुरसत रा उपासक री व्है सकै है।

बौत लम्बै समै सूं लिख्यो अठी–उठी,

बिखर्‌यो पड़यो सगळौ संकलित हो,

छोटी–सी पोथी रै रूप में तियार हुया

औ संग्रै आपरै हाथां में सौंपू हूँ।

म्हारी अरदास है :

पोथी में म्हारी पद–प्रतिस्ठा नै नीं देखो

कविता रा पदां रौ आणंद लेवौ।

म्हारी कल्पना लोक री खुली

छोटी–सी खिड़की मांय सूं

दुनिया नै जैड़ी देखी, अनुभव करी,

जैड़ो जाण्यो, आणंद लियो

उणी माथै आखरां सूं अभिसेक कर्‌यो।

म्हारो चिंतन, मनन या प्रस्तुति

मौलिक है अैड़ो म्हारो कोई दावो नीं।

भणै, सुणै री छिया, या परछाईं सूं भी

बा मुकत नीं व्है सकै।

म्हारी रचनावां कदैई भी सार्वजनिक कसौटी माथै

उतरी नीं है इण वास्तै उणरी कमिया री तरफ भी

म्हारो ध्यान गयो नीं है।

सैं रचनावां चावी हो, अैड़ो भी नीं

पण कदैई–कदैई काचा आम रौ सुवाद भी

न्यांरै तरै रौ स्वाद दे जावै है,

अैड़ो भी व्है सकै है।

गुजरात रै अळेखूं साहित्यकारां नै म्हैं पढ़यो हूँ।

गुजरात री साहित्य जातरा रै अेक माँझी,

श्री सुरेश दलाल रै साथै साहित्य–चरचा रै दौरान

म्हारे भीतर बसी कविता नै

बै भाँप गया।

उणारी प्रेम सूं भरी म्हारी भावना रै संसार नै

म्हैं उणारै साम्हीं खोल दियो...खुल गयो...

उणानै आग्रहपूर्वक कैयो कै म्हारी कल्पना,

भावना रौ जगत चाहे म्हारी निजी सम्पत्ति है

पण आपां गुजराती लोग....

सम्पत्ति यूं ही पड़ी री, जोग नीं हो

अर, तदै म्हारी बिखर्‌योड़ी रचनावां नै

संसार में नीड़ बणाणो सुरू कर्‌यो।

सैं भैळी करतां–करतां

नीड़ घणौ मोटो बण गयो।

श्री सुरेश भाई नै समै निकाळयो,

उणमें सूं कवितावां छाँट ली

अर अेक सिल्पकार री भांत

नीड़ बाँधण में आछी मदद करी।

म्हारी रचनावां रौ नीड़

आपनै निमंत्रण देवै है....

पल दो पल आराम लैयनै पधारो,

म्हारे इण नीड़ में, आपनै भाव जगत मिळैला

अर भावनावां लैहरावैली। कविता रै साथै

प्रकृति जातरा री कल्पना श्री सुरेश भाई नै दी,

म्हनै आछी लागी, आपनै भी

पसंद आवैली.....

20.3.2007 **श्री नरेन्द्र मोदी**

विगत

सम्पादकीय : प्रो. कल्पना पुरोहित

म्हारी बात : श्री नरेन्द्र मोदी

1.	धन्य	9
2.	चाणचक	10
3.	आपां	11
4.	विळाप	12
5.	आखौ जगत	13
6.	आज	14–15
7.	आपां तो	16
8.	आफत	17
9.	आस	18–19
10.	गरमी री कमी	20
11.	उठो लाल ! फतै स्वीकारो	21–22
12.	उठो वीर	23–24
13.	अेकाध आँसूड़ा	25
14.	अैड़ां मिनख	26
15.	उच्छब	27–28
16.	कारगिल	29–30
17.	क्रियापद	31
18.	स्वाभिमान	32
19.	चाल रा गीत	33–35
20.	गरबा	36–37
21.	गीत में	38
22.	गुलछड़ी	39
23.	अंजस	40
24.	छोड़ो	41
25.	जाणो नीं	42
26.	थांनै मुबारक हो	43
27.	फोटू रै उण पार	44
28.	छत्र–छिया	45
29.	बोले बसंत	46
30.	दरसाव	47
31.	डीळ रौ काम डीळ करै	48
32.	नरमदा	49
33.	जिंदादिल	50
34.	ललकार	51–52
35.	तितली	53

36.	परिचै	54–55
37.	पारदरसक	56
38.	उडीक	57
39.	प्रभु किरपा	58
40.	जतन	59
41.	अरदास	60–61
42.	प्रीत	62
43.	कस्मकस	63
44.	मांझळ रात नै	64
45.	म्हारो मन	65
46.	मन सूं समरपित होणौ	66–67
47.	मंतर	68–69
48.	माँ म्हनै देवत्व दीजै	70–71
49.	माया	72
50.	मिलण दो मेळै में	73
51.	जातरा	74
52.	रहस्य	75
53.	रमेश पारेख	76–77
54.	मंजिल नै पाणो	78
55.	वंदे मातरम्	79
56.	विसम अर निराळौ	80
57.	विस्मय री सुबै	81–82
58.	पीड़ा नै बैवण द्यो	83
59.	सबद	84
60.	सनातनी मौसम	85
61.	सुपनां रा बीज	86
62.	भैळप	87
63.	मल्लाह	88
64.	संकल्प	89
65.	ओळू	90–91
66.	हिन्दू–हिन्दू मंतर	92–93
67.	ग्यारहवीं दिसा	94

धन्य

धरती आ फूटरी है

आँख आ धन्य है

हरी–भरी घास माथै धूप फैल री अठै

किणी भी तरै धूप रौ तेज सहन नीं होवै

आभौ तो न्यारौ है

आ धरती भी निराळी है

आभा में इंदरधनुख फैले, इतरावै

हवा में रंगां रा आकार खींचै

किण जलम रौ ओ पुण्य है,

जिंदगानी धन्य है, धन्य है।

समंदर औ उछळै है, ऊँची लैहरां में

किणनै ठा कै भर्‌यो है बादळां रै मांय

अणूतो ! अणपार औ शून्य है

धरती आ फूटरी है।

मानखै रै मेळ साथै मेळ औ मिळतो रैयो

पण दूजां रै साथै म्हैं, खुद नै

मांयलो दरद देवतो रैयो।

औ सैंग अनन्य है

अर कुछ तो अगम्य है।

धन्य, धन्य, धन्य है

धरती म्हारी फूटरी है।

चाणचक

अंधेरा रै कागद माथै

म्हैं अेक ताळाब मांडू हूँ

ताळाब माथै झूकै है अेक डाळ

भंवरां री गुंजन लैय'र

गैरे अंधकार नै हल्को करनै

म्हैं बणावूं हूँ अेक चांदड़लो

देवूं हूँ उणनै नीलो, आसमानी रंग

ताळाब रै मौन जळ जिस्यो

चाणचक.....

बैसाख रौ दोपारी रौ सूरज

कागद नै बाळ'र रख देवै है

अर म्हारे हाथ में

काँप जावै है बुरस

मिढ़कां री चितकार

मौसम रा सुपनां

सुपनां रौ मौसम

सैं कुछ भाप व्है जाणो।

आपां

आपां जिंदगानी रा जिगरी यार हा

आपां छळकतो व्हीयो प्यार हा।

कोई रोके नीं, कोई टोके नीं,

आपां मनमौजी दरबार हा।

मन होवै है तो आपां उड़ां हा,

या दरिया में जाय आपां डूबां हा।

आपां परबत रै ऊपर सूं सूरज बण

मांझळ रात में भी उगा हा।

किणी री निंदा नीं, संकोच नीं,

आपां प्यार री बैवती धारा हा।

हुसियार लोग आपांनै पागळ कैवै,

वै सांचा ! आपां गलत नीं हा।

अेक मोटो दरियो उछळै है,

आपां फूट जावां वैड़ां बुलबुलां नीं हा।

अठै आपांरो कोई किनारो है,

आपां तो दरिया री मझधार हा।

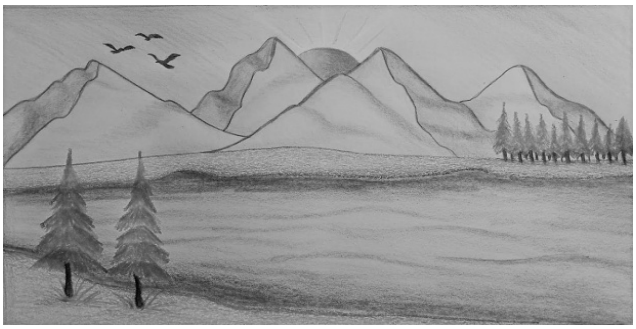

विळाप

थारै बारे में जाण्यो

अर मन रै हिमाळै नै

धक्को लाग्यो

थनै देख्यो तो म्हारी आँख्यां में

चांद उग्यो

म्हारे मांय

चंदण रौ रूंख मैक्यो

थू मिल्यो अर म्हारे रोम–रोम में

महक रा भाखर हिळ उठ्या

पण हाय रे....!

अै भाखर पिघळ रैया हैं

चंदण री महक

इणांनै बाळ रैयी है

अर बानी व्है गयी है

सुपनां री सौगात

दूर किनारे

म्हारी आँख्यां रौ चांद

क्षितिज माथै जा बैठ्यो है

थारै बिना

म्हारी नांव नै किनारो ले जावै

अैड़ो माँझी कदै मिळैला ?

आखौ जगत

काल रै मारग रौ अंत आ गयो

उणरी तीखी नोंक माथै उग्यो है

आज री सुबै रो बिरख

हवा री डाळी माथै झूलै है

किरण रौ फूल

कोई मनवांछित भूल करणी हो जियां

पंखी–पंखेरू शांति सूं जीवै, गावै हैं

म्हैं खोल देवूं हूँ सैं खिड़कियां

अस्तित्व ईतो छोखौ कदैई नीं लाग्यो

म्हैं आपरै सरीर नै

मन नै, हिये नै

ईसर रौ परसाद ही मानूं हूँ,

अर आखौ जगत मानो

म्हारी खोळै में मिळ जावै है।

आज

ओ हो, वो हो,

इस्यो हो, विस्यो हो,

अठै हो, वठै हो

थाकै मन में हवा

खंडहरां रा खंडित वैभव

अर गळियां में

कठै उळझयां रैवा आपां

परछाईयां रा भूत री तरै।

भूतकाल मानो भूत–प्रेत री छिया लैय'र

भटकती इतिहास री

आत्मा

आत्मा अमर है....

इमरत नै भी

चाहिजै

वरतमान री

काया।

आवण वाळा काल में

अमर होण रै वास्तै

बित्यां काल रौ ईतो

मोह राख'र

आज नै

आँख्यां साम्हीं धोखां दैय’र

जीवण रौ कोई अरथ है ?

आपां तो

सिंझ्या री वेळा, म्हैं मनमौजी रहूँ अेकलो,

म्हारे इण तन–मन में उभरै तरणेतर रौ मेळो।

किणी सूं कुछ लेणो–देणो नीं,

कदैई नीं व्हैला थारो–म्हारो

इण दुनिया में जको कुछ भी है,

बौ है मनपसंद आपांरो।

मारग म्हारो सीधो–साधो, नीं भीड़ नीं कोलाहळ

सिंझ्या वेळा, म्हैं खानाबदोस रैवूं अेकलो।

कोई मारग नीं, ना ही संप्रदाय :

मांणस तो बस मांणस है,

उजाळा में कांई फरक पड़ै है,

दीयो हो या लालटेण।

मोटा–मोटा झूमर री भांत, कदैई नीं हैं लटके,

सिंझ्या वेळा, म्हैं खानाबदोस रैवूं अेकलो।

आफत

सोलह बरस री रूपवती छोरी जैड़ी नदी

आज क्रोधित व्है'र सिंहनी व्है गयी है

बिरखा रै कारण बां बौत उतावळी व्है गयी है

उणनै किणी री लाज, सरम नीं है

आपरो आपो गंवानै

बावळी लुगाई री तरै

निराळौ सौ व्यवहार कर रैयी है

अर सायद उणनै खुद भी ठाह नीं व्है

कै उणरौ

पाणी ईतो निस्ठुर, कठोर व्है सकै है,

कै गांव रा गांव डूबांवै

तिरे हैं किती ही लासां

कितरा रा डूब्यां हैं सांस,

आखरी चीख, असफलता.....

पाणी में पाणी व्है'र

बैह रैयी है,

विनास करती कुदरत

आपांनै आपरौ कुरूप परिचै देवै है

हाँ, पाणी रै जानलेवा जुनूंन रौ।

आस

उजाळै री आस लैय'र

अँधेरो उळीचौ

म्हैं अँधेरो उळीचौ।

उजाळै री चमक लैय'र

अँधेरो उळीचौ

म्हैं अँधेरो उळीचौ।

काळ चक्कर री कालिमा नै भेद्यो

उजाळै री अबै नीं कोई सीमा

जोत आज प्रकट व्हीं ईया

मानो नवरंगी परवाळौ

उजाळौ ही उजाळौ

आज उजाळौ ही उजाळौ

उजाळै री आस लैय'र

अँधेरो उळीचौ।

गत अेक, मत अेक

अर प्रगति रौ मारग भी अेक

दृढ़–निस्चयी अर दृढ़–नीतिमत्ता

है जीवण भर रौ अेक हीज वैस।

भूंडा साथै तो सदा रै वास्तै

लगा दिया है ताळा

उजाळा–उजाळा

उजाळै री आस लैय'र

अँधेरो उळीचौ।

जस कीरत री कोई भूख नीं

कोई पसंद, ना पसंद नीं

रैयी हिये में सदा क्षमा

हिये तळ रौ राम ही रूंखाळौ

उजाळा–उजाळा

उजाळै री आस लैय'र

अँधेरो उळीचौ।

गरमी री कमी

गरमी बिना मानखौ जिस्यो मानखौ भी

अठै हाँफै है।

मानखौ जिस्यो मानखौ किण वास्तै

अेक दूजै नै सराप देवै है ?

पाणी नै गरमी नीं मिळै तो

रूंखड़ा अर पत्ता सूख जावै हैं

पतझड़ रा रूंख माथै बैठ

फैरूं कोयल कियां पंचम गीत गावैली ?

मिनख नै मिनख थपथपा'र

फैरूं क्यूं करै अवज्ञा है ?

गरमी बिना मानखौ जिस्यो मानखौ भी

अठै हाँफै है।

बिना प्रेम पागळो बण'र मानखौ, लाचार

पराधीन–सौ जीवै है

अभाव री अेक डोरी ले,

पल नै पल सूं सीवै है।

मुस्कराहट री छुरी लैय'र,

चुपचाप मानखौ आँसू नै काटै है

गरमी रहित मानखौ जिस्यो मानखौ भी

अठै हाँफै है।

उठो लाल ! फतै स्वीकारो

धरती री है मुस्कळ वेळा

लोगां सैं व्है जावो भैळा

आज फतै रौ करो सुवागत

आवो, आज फतै रौ करो सुवागत

गीला–सिकवां नै छोड़'र

महक भरी माटी बण'र

उठो जागो, दौड़ो दौड़ो

अेक–दूजां रै साथै रैवो

मत रैवो अेकला

धरती री है मुस्कळ वेळा।

पीड़ित मानखौ, आलो जीवण

मन रौ बण्यो पद्मासन

चैरो न्यांरा है समाज रौ

पण नीं निराळौ

पण आपरो फरक भर्यो है

धरती री है मुस्कळ वेळा।

धरती री धूळ नै माथै पे लगावां

मत बैठो हिंडोळां माथै

चालो, चालो किणी नूंवै मारग माथै

सुपनां कुछ सजावां

धरती री है मुस्कळ वेळा।

माटी सूं भर्यां पगां रौ काम नीं अठै

है अठै वीर सपूत रौ धाम

गिगन भेदी जयघोस रै साथै है

तरणेतर रौ मेळो

धरती री है मुस्कळ वेळा।

उठो वीर

नींदड़ली री चादर ओढ़'र

सुत्यां रैया सरीर

वीर थे उठो, जागो

ताकि चमकतो रैवे खमीर।

आसमानी आग रा

धधकतां जाळ वौ लायो है.....

भालां सूं बिंधै अैड़ी किरणां नै

ढाळ बण'र देवौ चुनौती

देवी कामाख्यां री

चित्कारां नै काना सूं भरनै सुणौ

उणसूं पैला जागो तो

कुछ कर्‌यो कैहलावैगा,

उणसूं पैलां उठो....

रुक्मिणी रौ रुदन सुण'र

द्वारकानाथ बण'र दौड़ो,

आपां रै कनै समै रैयो थोड़ो

सुदरसण चक्कर लैय'र दौड़ो

अबै बांसुरी बण'र नीं बजो

ओ वीर अबै तो जागो !

हाँ, वाणी चिथड़े हाल बण जावै

उणसूं पैलां दौड़ो अर जागो

ताकि मिनखपणै नै कठैई

लाग नीं जावै कोई दाग।

सुपनां.....

आग री राग में

कुचल्यां गया हैं.....

आंधा पंथी सूं

मत पेटी, मौत री पेटी बणी है

मत नीं, माथै धरे है

हिमाळै री कोख में जंगळी आग लगी है

इण जंगळी आग नै मिटाण नै दौड़ो

अर ईसर किरपा माँगो।

ओ वीर ! अबै तो जागो

आसाम कांप रैयो है

वध व्हैतां टाबरां री चित्कार सूं

निःसहाय बणी व्ही सप्तभगिनी,

चिता माथै बळती

उठो....वीर अर धीर....

आसाम ही नीं

देस रौ कल बळै है

उठो वीर अर धीर

कायरता सरीर में समा जावै

उणसूं पैला उठो....वीर अबै तो जागो !

अेकाध आँसूड़ा !

संबंध आवै, आ–आ नै बैव जावै,

छोड़ जावै आँख्यां में अेकाध आँसूड़ा

ठंडा व्हीयां आँसूड़ा में भाठे रौ भार है,

कुणां पे सितार, जिणरै टूटे सैं तार हैं।

तरंगां लू बण जावै हैं, कठैई नीं जावै

आँख्यां में बस अेकाध आँसूड़ा रै जावै।

काँच रा टुकड़ा कदै तांई बचानै राखौलां,

आसावां, अपेक्षावां ईती कै याचना होवै नीं,

बैवतां व्हीयां पाणी में हस्ताक्षर व्है नीं हैं

आँख्यां में बस अेकाध आँसूड़ा रै जावै।

छोखां संबंध म्हनैं भयानक सा लागै हैं,

फूलां रै मारग माथै काँटा चुभै हैं,

इण वन रै अेकांत में, अबै कोई नीं आवैलां।

आँख्या में बस अेकाध आँसूड़ा रै जावै।

अैड़ां मिनख

बोलणो व्है जठै वठै बोलै नीं

अर नीं बोलणो व्है वौ बोलै

अैड़ां मिनख होवै सदा

तिनकां जियां तोलनै।

आवाज री आंख्यां उठावौ

अर जको कैवणो है, वौ कैय डालो

रहस्यपूर्ण चुप्पी रै आडम्बर नै

गरमी भरी आँच सूं जलाओ

कदैई बैठणो नीं आपांनै खुसामद री गोद में

बोलणो व्है जठै वठै वौ बोलै नीं।

अर नीं बोलणो व्है वौ बोलै

किणी री निंदा सुणणो

अर चुप रैणो, पाप है

सांच बोलनै स्वीकार करे जको,

उणरा सैं गुनाह माफ हैं

पवन री लैहर में, बिरख रौ गौरव

मस्त व्है'र डोले

अनंत काल सूं प्रकृति मांय

कोई झूठ नीं बोलै।

उच्छब

पतंग....

म्हारे वास्तै ऊँची उड़ान रौ उच्छब

म्हारो सूरज री तरफ रौ अभियान

पतंग....

म्हारे जलम–जलम रौ वैभव

म्हारी ही डोर, म्हारे हाथ में

धरती पर पैर

अर आभै में

कोई पंखेरू व्है अैड़ी

म्हारी पतंग....

अळेखूं पतंगां रै बिचाळै भी

म्हारी पतंग उलझै नीं

किणी बिरख री डाळियां में,

कठैई फँसै नीं

पतंग....

मानो म्हारो गायत्री मंतर

अमीर हो, धनवान हो या गरीब हो

सैं नै 'कटी पंतग' भैळी करण रौ आणंद होवै है।

औ आणंद भी

न्यांरो अर निराळौ

कटी पतंग रै कनै

आभै रौ अनुभव है

हवा री गति री दिसा रौ ग्यांन है

खुद अेक बार ऊँचाई माथै गया,

कुछ देर वठै रैयो

इण बात रौ परतख प्रमाण है।

पतंग....

म्हारी सूरज री तरफ जातरा

पतंग री जान डोर में

पतंग रौ सिव आभै में

पतंग री डोर म्हारे हाथ में

म्हारी डोर सिवजी रै हाथ में

पतंग रै वास्तै हवा रौ मारग

सिवजी बैठे हिमघाट

पतंग रै साम्हीं मिनख सूं घणौ ऊँचो

पतंग उड़ै सिवजी री गोद में

अर मिनख जमीन माथै बैठ्यो

गुंजलां निकाळै है।

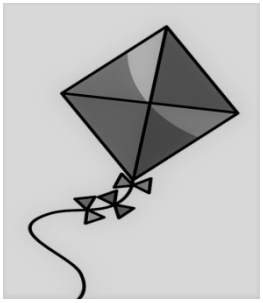

कारगिल

कारगिल

पैला भी गयो हो,

टाइगर हिल पैला भी देखी ही

तदै

राजाधिराज रै

धोळै मौन नै

जी भ'र देख्यो हो

आज

हर चोटी

गरजती ही

बंब, बंदूक री गूंज सूं

बरफ री सिलावां माथै

धधकतां अंगारा जिया

सेना रै जवानां नै देख्यो

अठै

हर जवान

किसान हो

जको अपणै आपनै बीज रैयो हो

ताकि

आपांरो काल मुरझा नीं जावै।

हर जवान री आँख में

उमड़तां सौ करोड़ सुपनां देख्यो

आपरी आँख री पळक सूं

मिरत्यु नै जकड़ण वाळा

वीर देख्या

अर जमराज नै,

आ वीरां रै चरण चूमतो देख्यो हो।

धधकतां अंगारा समान

वीर जवानां री गरम साँसां में

पिघळतौ बरफ

झरणा बण बैवतो हो

झरणै री गति में

समायो हो

सुजलाम्

सुजलाम्

भारत रौ भाव अर

झरणै री कोख सूं

फूट रैयो हो

वंदे मातरम् रौ गान।

क्रियापद

म्हारे आड़ै–पाड़ै

खींचो अेक सबदां रौ चक्कर

फैरूं उण चक्कर नै चोरस करो

फैरूं उण चक्कर रै चोरस में जड़ो रंग–बिरंगा

कंचां जैड़ां सबद

सबद तरल कंचां रै जैड़ां

काँच रै सबद :

सांच रै सबद : आँसू जैड़ां

या पूरण विराम जैड़ां।

विसेसणां रै आड़ै–पाड़ै

खींचो लिछमण रेखा

रखो मरजादां राम री

नांव रै आड़ै–पाड़ै खेला करो

शून्य–गुणां रा खेल

अर क्रियापद नै रखो बिचाळै

अर फैरूं बणावौ

अेक अनंत चक्कर।

स्वाभिमान

'झूठ बोले, कौवां काँटे'

इण वास्तै हमेस सांच बोलणो जरूरी है

सांच ही तो आपांरो स्वाभिमान है

मजबूरी नीं है।

सांच नीं बोले तो कोयल री कुहूक नै

मरयोड़ी माछली री तरै

कौवां चोंच मार–मार'र खतम कर देवैला।

अफवाहां माथै आधारित समाचार

सुबै–सुबै उगै हैं काळै सूरज री तरै

सांच सूं सत्याग्रह तांई री

आपरी जातरा में

आपांनै मिळै हैं

बिना पैर चालतां

प्रवासियां री पगडंडी

खाली भीड़, टोळियां।

चाल रा गीत

गोधूळि री धूळ

सिंझ्या रै सूरज री साँस नै कठैई तांई रौंदेळी ?

सूरज री तेज साँस

सियाळै री सुबै नै कदैई तांई काटेळी ?

दोपारी रौ सूरज

काळी सड़क नै कठै तांई तहस–नहस करैला

अबै तो रूक जावो....

म्हारे सूखड़यै खेत में

गांठा उगाणौ बंद करो

किणी नै मक्खन जिस्यां कोमळ पगां मांय सूं

अै गांठा खून चूसण लागै

उणसूं पैला बंद करो....

म्हनै पणिहारिन रा मटकां सूं

गुजरती किरण रा गीत गाणो हैं

भरी दोपारी में पसीणो बहावै

मजदूर रै पसीणो सूं चमकती

किरणां रा गीत गाणो हैं

म्हनै छुट्टी राखणी है

टाबर रै मक्खन जैड़ां नरम पगां सूं

उड़ता रजकणां अर गोधूळि री धूळ सूं

म्हनै अेक अलबम बणाणो है

म्हनै चाल रा चितराम खींचणा है

कुदरत रौ रूप बणाणो है

इण चितराम रै रंग–रूप में दाग हैं।

अै दाग

चाल–कुदरत रै बेडोल

कुरूप ही हैं नीं ?

अै और कुछ नीं हैं

आपांरै द्वारा उगायोड़ी

सूखी गांठा रा हीज परिणाम है।

कोमळ मक्खन जैड़ां पगां सूं उड़ी धूळ

उणी रै खून सूं लथपथ है

इण वास्तै हीज दाग हैं।

आपांरी चाल, कुदरत री

आ हीज निसाणी है।

अबै...

इण दाग नै रूप में खपाणो बंद करो

म्हनै तो मांझळ रै तपते सूरज रा

गीत गाणो हैं

उणी टाबरां में तेज पैदा'र

थे वाट जोवौ

इणरै पछै रा अलबम में दाग

नीं व्हैलां

पण हाय....

उणरै पैला तो कितरा ही टाबरां रा

गरम–गरम खून

आ गांठा नै बाळण रै वास्तै

बहा व्हैला....।

इण वास्तै कैवो हूँ

गांठा उगाणो बंद करो

म्हनै चाल–कुदरत रा

गीत गाणो हैं....।

गरबा

गावै उणरा गरबा

उणमें ताल मिलावां उणरा गरबा

गरबा गुजरात री पीढ़ी दर पीढ़ी री जागीर है।

घूमै उणरा गरबा

अर झूमै उणरा गरबा

गरबा गुजरात री पीढ़ी दर पीढ़ी री जागीर है।

सूरज चंदा गरबा,

अर रितुवां भी गरबा

गरबा गुजरात री पीढ़ी दर पीढ़ी री जागीर है।

दिन भी गरबा

अर रात भी गरबा

गरबा गुजरात री पीढ़ी दर पीढ़ी री जागीर है।

संस्कृति गरबा

अर प्रकृति भी गरबा

बाँसुरी है गरबा, मोर पांख है गरबा।

गरबा मति है, गरबा सहमति है

वीर रौ भी गरबा, अमीर रौ भी गरबा।

काया भी गरबा अर

आत्मा भी गरबा

गरबा जीवण री सुगम–सी शांति है।

गरबा सती है अर

गरबा गति है

गरबा नारी री फूल जिसी पूंजी अर सगती है

गरबा सत है अर

गरबा अक्षत है

गरबा ही माताजी रौ आणंदमय सिंदूर है।

गीत में

पंखी रै पंख में आयो व्हीयो गीत

कै गीत में कोयल अर बुलबुल भी बोले

उणरै अेक पंख में धरती रा प्राण हैं

अर दूजा पंख आभै नै तोळै।

आपरै कागद माथै सूरज बणावूं हूँ

अर बणावूं हूँ पूनम रो चाँद

म्हारे कागद माथै लैहरातो बिरख है

अर बिरख माथै हर्यां पत्ता

कुटुम्ब री ओळू जैड़ी छोड़ी चट्टान

उणनै झरणै रौ गीलोपण जगावै।

अेक तरफ रेगिस्तान अर दूजी ठौड़ दरिया,

तीजी ठौड़ नदियां री लिपि,

कंठ में तो अैड़ी अेक तिरस है चावैपण री

जकी छुपायां नीं छुपी।

आँख्यां में आभै नै उठा'र चालूं

पण बैठ्यो हूँ म्हैं धरती री गोद में।

गुलछड़ी

गैरी, कुरूप खाई पड़ी है

मानखै नै मानखै री कैड़ी

अफरा तफरी हर घड़ी है।

म्हनै तो सेतु बणणूं है

प्रेम रौ सेतु बणणूं है

गर मिनख–मिनख सूं मिळै तो

न्यांरी–निराळी सी अनंत घड़ी है।

पहेली में बुणण रौ अरथ नीं रै

गुलाब व्है'र उगणौ अठै व्यर्थ नीं रै

मुस्कल व्हीं सैं दूर अर आपां

अेक गुलछड़ी मिळी है।

अंजस

म्हनै सदा सूं अंजस है

कै म्है मिनख हूँ अर हिन्दू हूँ

पल–पल अैड़ो अनुभव होवै है,

कै मोटो, विराट सिंधु हूँ।

किणी नै भी घटातो–बढ़ातो नीं

बस करूं सगळा नै जमा

पसंद है मिनख मात्र रौ साथ

चाहिजै प्रेम भरी गरमी

नरमदा रौ पाणी म्हारे खून में

म्हैं फूल माथै टिक्यो अेक ओस बिन्दु हूँ।

म्हनै सदा सूं अंजस है

कै म्हैं मिनख हूँ अर हिन्दू हूँ।

आँख चाहे छोटी लागै

पण दीठ व्है मोटी

संप्रदाय री कोई गळी नीं

पण भांत–भांत तरै रा स्कूल होवै हैं

सूरज, बादळ, ग्रह, नखतर

म्हैं अपणै तेज रौ इंदर

म्हनै सदा सूं अंजस है

कै म्है मिनख हूँ अर हिन्दू हूँ।

छोड़ो

काया छोड़ो, माया छोड़ो

वस्तु अर परछाई छोड़ो

किलां तोड़ो, पिंजरा तोड़ो

सुपनां नरम–सुकोमल छोड़ो।

रात री भटकण अर आवारापन

रात री बड़बड़ाहट बिलकुल अेकली।

वाणी छोड़ो, अरथां नै छोड़ो

भ्रमां री भी नींवां तोड़ो।

कोई नीं तो नीं सही

अर कोई है तो भी नीं–नीं

इण चरचा री कस्मकस छोड़ो

नीं रै मारग नै हल्को ओढ़ो।

जाणो नीं

औ सूरज म्हनै वालौ लागै है

आपरै सातां घोड़ां री लगाम

हाथ में राखै है

पण उणनै किणी भी घोड़ै नै

चाबुक मार्‌यो हो

अैड़ो जाणण में आयो नीं

इणरै पछै

सूरज री मति

सूरज री गति

सूरज री दिसा

सब अेकदम बरकार

खाली प्रेम !

थानै मुबारक हो

पाणी नै थे भाठो कैवो हो

या फैरूं भाठो नै पाणी

या बादळ नै आभै री सळवटां कैवो हो

या कमल नै बबूल कैवो हो

इणसूं किणी नै कोई फरक नीं पड़ै है।

थे अफवाहां नै सांच कैय सको हो

अर दिन नै रात

बसंत नै पतझड़

अर समंदर नै रेगिस्तान

या जीवण नै मिरत्यु कैय सको हो।

औ सगळौ थारी वाणी रौ व्यभिचार

थानै मुबारक

क्यूंकै

कुदरत तो रैवै है

वैड़ी री वैड़ी री

स्वस्थ अर तटस्थ।

फोटू रै उण पार

म्हैं आपरी फोटू में हूँ अर नीं भी

म्हैं अपणै पोस्टर में हूँ अर नीं भी

इणमें कोई विरोध

या विरोधाभास नीं है।

फोटू आत्मा जैड़ी नीं है

आ तो पाणी सूं भी आली व्है जावै है

अगन सूं बळ जावै है

बां आली या बळै

तद भी म्हनै कुछ नीं होवै।

थे म्हनै म्हारी फोटू या पोस्टर में

ढूंढण री फालतू आफळ मत करो

म्हैं तो पद्मासन री मुद्रा में बैठ्यो हूँ

अपणै आत्मविस्वास में

आपरी वाणी अर करम खेतर में।

थे म्हनै म्हारे काम सूं भी जाणो

कारज ही म्हारो जीवण काव्य है।

काव्य में छंद रौ बंधन होवै,

लय ताल भी है।

जबदस्ती गीता सार

दरवाजे माथै करम धार

था सगळां रै वास्तै अकारण।

छत्र–छिया

सफल व्हीयो तो ईसकौ रौ पात्र

असफळ व्हीयो तो दया रौ पात्र

सफलता–असफलता सूं पार व्है'र

तीजे किनारे माथै खड़्यां रैवो।

कायरता मन में समावै नीं

अर गरीबी री क्यूं हो परवाह ?

आखौ जीवण जीय'र

म्हैं चावूं हूँ मरणो।

ईसर री छत्र–छिया में हर रोज सीखूं हूँ

म्हैं तो अेक छात्र

सफल व्हीयो तो ईसकौ रौ पात्र,

असफल व्हीयो तो दया रौ पात्र।

निंदा रौ औ खारो दरियो

ओळू री मधुर मीठी वाणी

दोनूं ही बेकार छावनियां हैं

आपांनै तो बणाय राखणी है, नीं टूटे अैड़ी कड़ी

अरदास बस ईती जुद्ध भोम में

काँपे नीं औ सरीर

सफल व्हीयो तो ईसकौ रौ पात्र,

असफल व्हीया तो दया रौ पात्र।

बोले बसंत

अंत में सुरू अर सुरू में अंत

पतझड़ रै दिल में चहकै बसंत

उमर सोलह साल,

कठैई कोयल री लय

टेसूं रै फूलां रा छळकै किण माथै प्रेम

चावै लागै हो या रंक

पण हैं मांयनै सूं श्रीमंत

पतझड़ रै दिल में चहकै बसंत

आज तो वन में किणरौ ब्याव

अेक–अेक बिरख में प्रकटे दीया

आसीस देवण नै आवै हैं संत

पतझड़ रै दिल में चहकै बसंत।

दरसाव

रूंखड़ां रै बाग–बगीचा में

बैठ्यो हूं अेक रूंख रै नीचे

हरियाळी भी घास पवन में झूलै

पतंगा पंख खोळै अर मींचै

आपरी गुंजन में भंवरा

फूल रौ रस सींचै

उड़ता आ दरसावां रै साथै

आंख मिळै अर सांझ ढळै

अर म्हारे भीतर अेक आखै रौ आखौ रूंख खुळ जावै है

अंधेरे में खिळै हैं, तारां फूलां जियां

भंवरां रा पंख लगा म्हैं तो पवन में तैरतो

मानो कोई जुगनूं होळै–होळै परकास लैय'र गूंजतो है

अेक महकती सुमधुर गीत री तरै

सगळी प्रीत लैय'र

हरियाली अै घास पवन में

म्हारा बाग–बगीचा में।

डीळ रौ काम डीळ करै

डीळ रौ काम डीळ करै है, मन करै मन रौ काम

नासवान उपवन में, म्हैं तो देख्यो करूं हूं सीता राम।

वाणी रै बिना वीणा बाजै है

होळै–होळै सुर जागै है

हिवड़ौ म्हारो रटतो रैवै है बस अेक फूटरो थारो नांव

डीळ रौ काम डीळ करै है, मन करै मन रौ काम।

डीळ, मन अर हिवड़ै में उछळै है

भविस्य रा सत्ताईस नखतरां रौ बीज

आंख्यां मांय अेक दुनिया म्हारी

तैरती अर लुभावती

म्हारी अेक अयोध्या जिणमें

रघुपति राघव राजा राम

डीळ रौ काम डीळ करै है, मन करै मन रौ काम।

नरमदा

नरमदा सिरफ अेक नदी नीं है

आपांरी सदी–दर–सदी री साधना है,

अमर आराधना है।

नरमदा नक्सां माथै बणी अेक लकीर नीं है

वां गुजरात रै हाथ री रेखा है

लोक री भाग–विधाता है।

नरमदा रै निरमळ जळ माथै

मैळी चादर डाळण री कोसिस भी करोलां

तो थांनै कबीर री सौगंध है

आ नरमदा गाँधीजी अर मुंसी री है

सरदार पटेल री सुपनां री सरिता है।

नरमदा गुजरात री अस्मिता है

नरमदा कुलदेवी है

नरमदा वरदायिनी है।

जिंदादिल

भाग्य नै कुण पूछै है अठै ?

म्हैं तो चुनौती नै स्वीकार करण वाळौ मिनख हूँ।

म्हैं किणी सूं उधार नीं लूंगा।

म्हैं तो खुद ही बळती लालटेन हूँ।

म्हैं किणी रौ मोहताज नीं

म्हनै म्हारो उजाळौ हीज घणो है

अंधेरा री लहरां नै काटे

कमल रै तेज–सो तेजवान है।

कोहरे में म्हनै रूचि नीं

म्हैं तो उन्मुक्त, जिंदादिल हूँ

भाग्य नै कुण पूछै है अठै ?

म्हैं तो चुनौती नै स्वीकार करण वाळा मिनख हूँ।

ललकार

भोम री पुकार है

गिगन री पुकार है

मारग भूल्यां व्हीयां पंथी है

अर पारथ नै ललकार है।

संप्रदायां मांय बंट्तो मानखौ

मानखै सूं बणै है दानव

हुंकार, हो–हांके सूं

व्हीयां हैं बौत सूं हंगामा अठै

अहं री खड़ी दीवारां हैं अठै

अर सुपनां रौ संहार है

ललकार है, पुकार है।

समानता री वातां, वातां ही री

अर अेकता भी पिसती गयी

कानून रा बंद दरवाजां अर

ईर्ष्या–द्वेष री खाई रै गयी

आँसू च्यारूं ओर हैं

अर सै ठौड़ अंधेरो है

ललकार है, पुकार है।

सरीर भूखौ है, मन टूट्यो हैं

मानखौ–मानखै सूं रूठ्यो है

अहं नीं पण जवानी रौ सागर

उछळ रैयो है अरे बिरादर

दीवारां नै तोड़ण रै वास्तै

आंख्यां में अंगारा है

ललकार है, पुकार है।

खंडहरां में ढूंढो सुपना

जीवण रै खातर अतिसय जरूरी

बित्यां कल नै भूळ'र

आज हिवड़े सूं खुळ'र

क्षितिज नै लम्बो बणा'र

डूब्योड़ां नै तार–कर

अेक दूजे रौ ले आधार

उजाळा रो अवतार है

ललकार है, पुकार है।

तितली

फूल माथै, बैठतां ही उड़ जावै

तितली फेरूं रंगा में डूब जावै।

आड़ै–पाड़ै खुळ जावै महक रौ ताळाब

उणमें तैरती तितली मानो कोई नांव।

सुख रौ कोमळ सूरज उग जावै

फूल माथै, बैठाता ही उड़ जावै।

निराळी है आं जिंदगानी, आवण–जावण रा कारण

कोई आय'र चल्यो जावै अर यादां में जीवै

डोरी बंध तो टूट नीं जावै

तितली फेरूं रंगा में डूब जावै।

परिचै

समै–समै रौ भांत–भांत परिचै

म्हैं मधुमक्खी हूँ।

सरद री सुबै रौ सूरज,

भीतर बैसाख रौ महीनो हूँ

मक्खी बण'र अठै–उठै

म्हैं कदैई कठैई नीं बैठूं

फूल रै कनै बैठ म्हैं तो

परिमल में जावूं

मस्त पवन रै झौके–झौके

फूल गुलाबी हूँ

समै–समै रौ भांत–भांत परिचै

म्हैं मधुमक्खी हूँ।

बाग व्है वठै राग भी होवै

अर रंग–बिरंगी लीला

बण्यां मारग माथै चालूं नीं

पण म्हारे वास्तै भांत–भांत रा मारग

अैड़ो देख्यो तो फकीर, फक्कड़

पण मन सूं म्हैं नवाबी हूँ

समै–समै रौ भांत–भांत परिचै

म्हैं मधुमक्खी हूँ।

भाठो देवै ठिस अर ठोकर

पण होवै अंतर अर संकट

भाठे मांय सूं रचूँ सीढ़ियाँ

जकी भाखर माथै पूगावै

खुद वो म्हारो खुदा हमेसा सूं,

सैगां रौ साथी हूँ

समै–समै रौ भांत–भांत परिचै

म्हैं मधुमक्खी हूँ।

पारदरसक

अमावस री रात रौ रहस्यमय मौन

या

दीठ गुनेहगार जिसी चुप्पी राखण में

म्हारो विस्वास नीं है।

पांणी री तरै पारदरसक रैणो

अर

बैवण रौ उच्छब कांई है

वो म्हैं आछी तरै जाणूं हूँ।

मिरगजळ अर

ताळाब रा मेंढका रै वास्तै सुरग रौ आभास

अर भ्रम रै भेद नै म्हैं भेधता हूँ

अन्याय रै साम्हीं आंख्यां उठावणौ

अर

न्याय रै साम्हीं आंख्यां झुकावण में

मानखै रै वास्तै

सरम नीं होणी चाहिजै।

उडीक

आकास में

भाठे जिस्यौ सूरज उग्यो

जूट....जिस्यौ सारो दिन

बिलकुल खुरदरो

सुस्क पवन बिरख रै साथै

न्यांरो व्यवहार करै है

दोपहर टी.बी. रै रोगी री तरै खांसै है

सिंझ्या लाचारी–सी ढळै है

अर लेटै है

सगळी रात सूरजमुखी

करै है उडीक

आवण वाळै कल रै सूरज री

कै कदैई तो सूरज

फूल बण'र उगैलां !

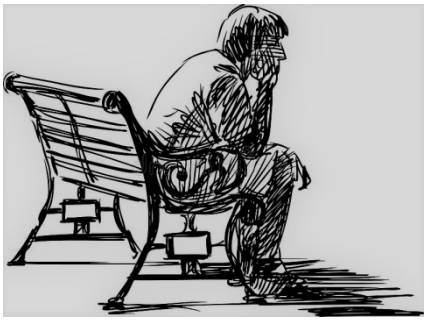

प्रभु किरपा

हे प्रभु !

म्हैं खुद नै अर दुनिया नै

खुस'र सकूँ या नीं

पण थानै में कदैई नाराज नीं करूंगा।

थारी किरपा सूं काँटा भी फूल बणै हैं

गर कोई छत्र–छाया नीं हो

अर भयंकर बिरखा व्है री हो तद

थै धूप बण'र कनै आवो हो।

मौसम कोई भी हो, आवतो–जावतो

या जावतो–आवतो रैवै

पण म्हारे मांयलै मौसम में

थै म्हनै बसंत रितु रौ आभास देवता रैवो हो

थै म्हनै कतरो कुछ देवो हो।

तदै किणी दिन

म्हैं, थांनै अर म्हनै दोनूं नै

अेक हीज सवाल पूछतो रैवो

कै थानै खुस करण रै वास्तै

म्हैं कांई करूँ

या कांई नीं करूँ ?

जतन

सिर झुकावण री बारी आवै

अैड़ो म्हैं कदैई नीं करूँला।

परबत री तरै अचळ रैवूलां

नदी रै बहाव–सौ निरमल

सिणगारिक सबद नीं म्हारा

नाभि सूं प्रकटी वाणी हूँ

करूं इण भोम सूं प्रीत

खामोसी रो आंणद लेवतो व्हीयो गावूं गीत।

संस्कारां री लय ताल में

गूंज री है कोई सदी

नीचा देखण री बारी आवै

अैड़ो में कदैई नीं करूँला।

म्हारे अेक–अेक करम रै लारै

ईसर रौ आसीरवाद

गळत जको नीं करतो

वो कदैई नीं डरतो

मांयनै ही मांयनै व्हैतां सगळा संवाद

म्हारो आचरण म्हारे बचानुसार

व्हैला नीं बुरा कदैई

नीचा देखण री बारी आवै

अैड़ो कदैई नीं कैवूलां म्हैं कदैई।

अरदास

मिनख री टोळी हो या मेळो

कुटम्ब अर बेलि जणां नै ढूँढ़तो हूँ।

म्हारे घर रै

प्रवेस द्वार माथै टंग्यो है :

'सांच रौ सुवागत है :

सांच चाहे विरोधी हो,

चाहे तिरछो–बांको हो।'

बगीचां री महक री बजाय

खाद री दुरगंध घणी अणमोल है

विरोध मांय सूं सांच नै

ढूंढ़णौ म्हारो थ्यांवस/मौन है।

अफवाहां नै राख–सौ बिखरा देवण रौ

विवेक भी है.....

अफवाहां सूं कदैई जीवण जीयो नीं

जा सकै

दो किनारां रै बिचाळै सांच नै

पावण री म्हारे में खिंमता है।

हर बात रौ सांच न्यांरो व्है सकै है

अर होवै हीज है

म्हैं....म्हैं सिरफ म्हारे सांच सूं

जुड्यो रैवणो चावै हूँ।

सांच म्हारे वास्तै सूरज है

अर....म्हारो जीवण

गायत्री मंतर बण जावै

अैड़ी म्हारी हर पल अरदास है।

प्रीत

जळ री जंजीर जिसी म्हारी प्रीत

कदैई बाँधण सूं बँधी नीं

कोई सौगंध देवै, ओ म्हनै पसंद नीं

फैरूं अैड़ां रिस्तां में म्हारो मन बँधतों नीं

रात भर ओस बिंदु सी ठारी आं प्रीत

पकड्यो कदैई तो पकड़ायो नीं।

धूप तो किणी दिन मुट्ठी में आवैली नीं

बैवती पवन नै पिंजरो भी रास नीं

बहरुपियै रूपी बादळ सी फिरती आं प्रीत

कदैई अंगीकार सूं अंगीकार नीं।

धुंध तो आवै अर जावै

इणसूं सूरज नै कुछ नीं होवै

राजहंस–सी तिरती म्हारी आं प्रीत

मोती री माळा में गूंथण सूं गूंथायो नीं।

कस्मकस

ऊँचा परबत नै पावण री कस्मकस करी,

पण भाठा मिल्यां अंत तांई जी।

खिल्यां बगीचां नै पावण चाल्यो

पण काँटा मिल्यां मारग में जी।

सदियां सूं चाह्यो नदी नै पावण

पण मिल्यां म्हनै बुलबुलां जी।

तपतो सूरज दूर रैयो

अर परछाई रा फोटूं मिल्यां जी।

चंदा नै म्हैं पावण चाल्यो

पण चमक नै म्हनैं खो दियो जी।

सागर री अेक लै'र जाणै क्यूं ?

किनारे जा'र रोई जी।

मांझळ रात नै

मांझळ रात नै कोयल बोले

हिवड़ै रा द्वार खोलै

कोयल रौ कैवणो ही कांई ?

मांयली बात यूं बतायी नीं जावै

जळ री बिसात यूं फैलायी नीं जावै

संवेदना नै ईयां कियां फैकां

कोयल रौ कैवणो ही कांई ?

आपरी वेदना नै आप ही संभाळौ

विस्वासजोग हो अैड़ो कठै है कोई मिनख

बंद किवाड़ क्यूं खटखटावै,

अर मिरगजळ सूं भरमावै

कोयल रौ कैवणो ही कांई ?

म्हारो मन

मन में म्हारे रोही लागी हैं

अंग–अंग मांय आग

रोही मांय भी ढूँढ़तो हूँ

हर्‌यो–भर्‌यो बाग।

सुखी देखै, दुःखी देखै

देखै रोगी भोगी

माया जिणनै छोड़ी

उणरी काया हमेस निरोगी।

झण–झण, झण–झण तार–तार

माथै बजतां बिना छेड्‌यां सा राग

अपणै मन नै समझावूं हूँ

जाग अजै तो जाग।

काँटा नै चुण लियो

फूल रा झीणां गलीचा बिछाया

सूखी इण धरती माथै

बीज दिया इंदरधनुख

पसीणां रौ तिलक ढूँढ़तो

है म्हारो भाग ललाट।

मन सूं समरपित होणौ

गिगन नै

आपरी गळबहियां में लेवण नै प्रयत्नसीळ

उछळतौ सागर

म्हारी प्रेरणामूरत है

आं ही म्हारे जोबन री

सगती अर स्फूर्ति है।

औ सहनाई भी बजावै है

जयघोस भी

किणी परबत री चोटी रौ

सिखर भी औ बतावै है।

किणी भी किनारे री परवाह करे,

अैड़ो औ सागर नीं

जै अंगीकार करण री सगती हो

तो.....

आपरी हथेळी में देवै

झाग रा फूल

फूल में छळकती है

लैहरा रै बगीचां री महक

फल में टपकती है

नदी रै विलय री व्यथा

सागर में समा गयी नदी नै

कदैई भी न्यांरो नीं कर्‌यो जा सकै।

म्हैं भाखर री तरै खड्‌यो रै सकूं हूँ

अर समंदर री तरै छळक भी सकूं हूँ

थे म्हनै कुतर भी सको हो अर

खोद भी सको हो

जळ री तरै

खुदाई री ढाळ में उतार भी सको हो।

हाथ में धरो

संवेदना री कील

अर प्रीत री हथोड़ी

क्षितिजां री दीवार

आकास री छत....

मिनखां री भीड़

हरी–भरी सृस्टि

म्हारे घर रौ आकार,

म्हारे मन रौ आकार,

म्हारे मन रौ विस्तार

औ आखौ संसार।

मंतर

सियाळै री रात....रेत रौ रेगिस्तान

बाळू रा कण–कण मानो सुवरण रा रज कण।

पळ–पळ रौ औ सौन्दर्य

इणरौ संबंध अपणै आप

सास्वत सूं जुड़्यो है।

बैवती व्हीं इण जिंदगानी में

हर पळ आवै अर जावै है।

बैवतो पांणी

टपकतौ उजास

पवन री लैहर

फूलां री महक

बळतो व्हीयो दीयो

सगळां री अनुभूति होवै है,

पण औ जीवण जको करतो रैयो आणौ–जाणौ

उणरौ ठौड़ ठिकाणो मालूम नीं

अर नीं पूछयो है

कल सांझ जिंदगानी रूक सी गयी होवती

बीत्यां व्हीयां कल नै भी जियो जा सकै है

आवण वाळा खिंण में आसा रौ दीयो

जळायो जा सकै है।

अंधेरा भी रोसनी नै चूम सकै है

बैवती व्हीं जिंदगानी रौ पळ–पळ रूक सकै है

कुछ खिंणा रै वास्तै जिंदगानी नै

जरूर मिल्यो तो हो

कुछ पळ जियो तो हो

चालतां–चालतां कुछ पळ नै रूक तो गयो

हरैक साँस मांय महक है

हरैक बात मांय प्रेम है

बीती व्हीं सांझ री ओळू है

रूक्योड़ां आँसूड़ां में बैवण री आसा है

सोयोड़ां सुपनां में नवी सुबै है

यंतर जैड़ी जिंदगानी में

पायो....सौन्दर्य रौ निराळौ मंतर।

माँ म्हनै देवत्व दीजै

म्हैं तो हिये री कोठरी में बैठ्यो हूँ माँ

माँ तू म्हनै कीजै कै सुखी रै, सुखी रै।

म्हनै देवत्य बळ दीजै

कायिक सगती दीजै

म्हनै दीजै थूं साँचपण

ताकि रखूं म्हैं मारग में

औ ही अेक म्हारो व्रत

म्हनै थारी चाहत

म्हनै थारै सूं राहत

माँ म्हनै बळ दीजै, कायिक सगती दीजै

म्हैं तो हिये री कोठरी में बैठ्यो हूँ माँ।

राग म्हैं त्याग्यो

विराग म्हैं माँग्यो

नीं फूलां री माया

नीं सौरभ री छाया

थारै उण साथ में, किता ही रंग

म्हनै आपणां नीं लागै,

लागै हैं पराया

म्हनै देवै है, सांत्वना अेक थू म्हारी माता

माँ म्हनै बळ दीजै, कायिक सगती दीजै।

म्हारो काँटो भरा है मारग

थारो प्यार तो है अनंत

म्हारी भवसागर में अेक थारो ही आसरो

म्हारी भवसागर में अेक थारो ही नांव

सागर भी किणी दिन सिसकी भरै

अर तदै भी

कदैई म्हैं कुछ नीं बोलूं अरे !

माँ, म्हनै बळ दीजै, म्हनै कायिक सगती दीजै।

बाग–बगीचां कदैई सूख जावै

फूल अपणै आप मुरझा जावै

माळी भी खुद जै सरमा जावै

तदै थू आँसूड़ां सूं सींच दीजै

म्हारा अवगुणां माथै आँख्या थारी मींच लीजै

फूल रौ अेक–अेक हार अैड़ो थू गूंथ

कै उणमें सूं प्रकट व्है ईसर रौ रूप

माँ, म्हनै बळ दीजै, म्हनै कायिक सगती दीजै।

माया

म्हनै है कोरे कागज री माया

कोरे कागज रौ काळजो देख्यो तो

कितरा ही चेहरा है छिप्या।

कोरे कागज में बादळ रौ चेहरा

अर बादळ बरसै तो उगे हरियाली घास,

कठैई–कठैई दिखै है बिरख अर परबत

अर आँख्यां नै सुण्यो

पवन री साँस

कोई नीं परायो–बेगानो

मौन रैय'र भी, हम अैसे छाए।

भंवरो, तितली अर जगमग जुगनूँ

बाँधै हैं पर्णकुटि अेक

कागज सूँघू तो आवै है उण मांय सूं

पैले मेह री महक

म्हनै मिळगी मुलायम छाया

म्हैं तो अणदेख्यां री ओढूँ परछाईं

म्हनै है कोरे कागज री माया।

मिळण दो मेळे में

भीड़ नै मेळे में बदळ डालणो

हीज म्हारो जीवण धरम

म्हारो जीवण करम

मेळे में मानखौ मिळै–जुळै है

समै नै सुहावणौ बणावै है

म्हैं 'हयात' नै मानूं हूँ

नीं–नीं माथै चौकड़ी मारूं

कोई इमारत ढहै तो

उणनै सहारो देवूं हूँ।

मानखै रै लारै माधव हैं

अर राघव हैं

म्हारै कनै बंसी है

अर सिव धनुख

ईसर अर सैतान रै बिचै

म्हैं तो हूँ बस मानखौ

मानखौ होणो हीज है मोटी बात

भू–लोक में सुरग देख हूँ

म्हारी दौलत आ हीज है

भीड़ नै छंटण दो

मेळे में मिलण दो।

जातरा

दूर–सुदूर भूतकाल में म्हैं जा सकूं हूँ

अर

अेक–अेक चेहरे नै साफ पिछांण सकूं हूँ

कोई दबाव यादां माथै डालणो नीं पड़ै

सहज ही सैंग दिख जावै है

पिछांण में आ जावै है

कुछ भी छुप्योड़ौ नीं पावूं

औ तो साफ स्पस्ट, सीधी–सादी

बात ईती ही है कै

जिणरै साथै सहन कर्‌यो होवै है

वै कदैई भूलै नीं हैं

अर साथै झेळी गयी यातना

आखिर तो.....

जातरा बण जावै है।

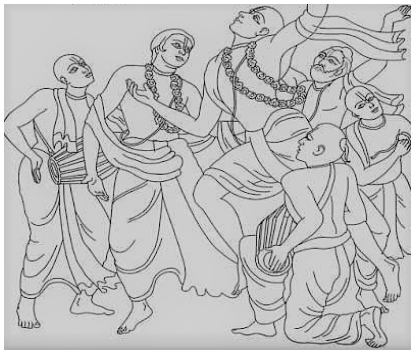

रहस्य

रात नै

काळां बुरखां पैहण'र खड़यां

बिरखां नै म्है देखणो नीं है।

म्हनै तो देखणो है

सूरज रै चांनणै में खड़यां व्हीयां बिरखां नै

भरी दोपारी रौ ताप झेलतां

फूलां सूं खिलतां अर

पंखेरूवां सूं महकतां

म्हनै बिरखां नै देखणो है....

सुबै रै बिरखां री खुसी

दोपारै रै टैम बिरखां री जवानी रो उन्माद

अर सिंझ्या रै बिरखां री समझदारी

म्हनै आपरै रोम–रोम में संभाळ लेणी है।

बिरख : म्हारी आत्मा रो अंस,

परछाईं में सुख–चैन सूं सोता

तपती दोपारी री साँस,

म्हारी परछाईं नै ओढ़तो

उणसूं पाऊँ पवनरूपी परसाद

अर अनुभव करूं झीणी–झीणी बरसात

बिरख : म्हारै अस्तित्व रौ पर्याय

म्हारो रहस्य।

रमेश पारेख

इण पंचम रूपी मेळे में

अमावस रो भयंकर सुपनौ घिर्‌यो है

सुपनां रै उगण सूं पैला ही

पतझड़ रा पांव अठै पड़्यो है।

भरी दोपारी में रात उगी है

आँख्यां में अंधेरो भर्‌यो है,

रमेश बिना म्हारो मन

दुःख सूं कळपै है

काळ अबै विकराळ बण्यो अर

आँसूड़ां मौन बैवै है।

रमेश रै आखरां नै म्हैं तो

नखतरां रौ नांव देवूं हूँ,

अमरेली नै याद कर

कविता रौ औ गांव देवूं हूँ

म्हैं अब किणनै बतावां

कै वीरानौ अठै कियां पड़्यो है ?

म्हनै बिना आँख रै चस्में में

रमेश जिस्यो दिखै है

सबदां रौ आधार लैय'र

पूगणौ है कविता रै कनै

रमेश री तस्वीर नै म्हैं

फ्रेम में फैरूं जड़ दियो है।

मंजिल नै पाणो

मंजिल नै पाणो

खुद नै भुलावै

दौड़ता, कूंदता

अर कदैई

डगमगातो भी....

खून सूं सिंचित

मारग माथै कदम बढ़ाता

अर

लाल चटक

पगडंडी नै देख'र

आँसूड़ा डळकाती मुस्कान बिखेरतां

बडेरां री

खूनी सैय्या माथै सूं

बदळती सूरज किरणां

सूरज री ओजस्विता

म्हारी मुस्कान नै,

उणरी लाली नै, फीको करती

अर तद म्हारो

'म्हैं' लुप्त व्है जातो

मंजिल नैड़े लागै

गति तेज व्है जावै।

वंदे मातरम्

वंदे मातरम् औ गीत नीं

औ आपांरी आन, बान अर शान है

आजादी रै महायज्ञ री आहुति है औ

देस भगती रौ सूत्रधार औ

गणतंतर रै हियेतंतर रौ महामंतर है औ

विकास री लगातार धड़कती

झुकै नीं अैड़ी बेमिसाळ पिछांण रेवै

ओ आपांरी.....

1857 रौ प्रकास पुंज औ

सांच रै वास्तै

खून रौ अभिसेक लगातार.....

वंदे मातरम्.....औ सबद नीं

ओ मंतर है आपांरो,

सुवतंतरता संग्राम री ऊर्जा रो स्रोत आपांरो,

विकास रौ औ राजमारग है

संकल्पित इण रास्ट्र जीवण रौ

महामारग है,

लोक जीवण री

हर सुबै री

प्रबुद्ध चेतना रौ सुर है औ

वंदे मातरम्.....

विसम अर निराळौ

चाँदड़लौ उगै

अर दरिया उछळै नीं

सूरज उगै

अर सूरजमुखी चहकै नीं

नदी खुद

समंदर नै मिलण सूं इंकार कर दे

फूल खिलै

अर भंवरा गुंजन करणौ छोड़ दे

घंटो बाजै

अर देवालय खुलै नीं

दियो प्रकट हो

अर मिंदर जगमगा नीं उठै

प्रेम ईतो विसम अर

निराळौ व्है सकै है कांई ?

विस्मय री सुबै

पराजै री रात डूब गयी है

विजै री सुबै आयी है

सुबै रौ आंणद ल्यो आज

आपांरो काल भी उजळो होवैलो

अंधेरे री तेज दीवार टूट गयी।

आयी आज वीरतापूर्ण सुबै

अबै सैंग ल्यो सपथ रौ मारग

आपांरो रणवीर, रणधीर रथ

करो खुद में सगळां नै महसूस

भूलां दो सैंग सुवारथ

फूल अर महक है आणंदमयी

आयी आज वीरतापूर्ण सुबै।

अबै पीड़ा री कथा नीं है

नीं शोक संताप

आँधी–तूफान दूर गयो

अर आकास रौ विसाल विस्तार

कंटक, संकट सैंग दूर व्हीयां

फूलां रौ बिछ्यौ बिछौणौ

आयी आज वीरतापूर्ण सूबै।

उमंग छळकती धरती गिगन में

सुगंध सुपनां रै रोम–रोम में

राम भरोसै राखौ हियै नै

नीं कोई असंतोस

आयी आज वीरतापूर्ण सुबै।

पीड़ा नै बैवण द्यो

पीड़ा नै बैवण द्यो

आँसूड़ां नै गिरण द्यो

फूल गिरे तो गिरण द्यो

धूळ में उणनै ठिठुरण द्यो

सुपनां भीग गया हैं

बिना कारण बँधस्यां गया हैं

आँख झरोखे बैठे आँसू नै

चातक री तरै निहारण द्यो

पीड़ा नै बैवण द्यो

आँसूड़ां नै गिरण द्यो

पलकां छळकै ही, आसा मुस्कावै

अंजाणी–सी हिये में कोई प्रेम लैहर छळकै

म्हारी अंखियां रै ताळाब में

हंसां नै तैरण द्यो

पीड़ा नै बैवण द्यो

आँसूड़ां नै गिरण द्यो

सुख–दुःख री अनुभूति तो है

पल दो पल री माया

म्हैं तो बस ओढ़ लेवूं हूँ

तूफानी बादळां री छियां

गैहरायां बादळ नै साजन

थे मन भर बरसण द्यो

पीड़ा नै बैवण द्यो

आँसूड़ां नै गिरण द्यो।

सबद

म्हारा सबद तरवार हैं

बैवता सबद हैं कलरव करतो पांणी

अेक दूजे रै वास्तै पूरक खड़ग–नदी री वाणी।

अेक दूजे रै साथै भैळा

फैरूं भी न्यांरो है काफिलो

आपरै वास्तै कठै कळपूं हूँ

औ तो है अनंत तार

कथा कथन रौ राजा म्हैं हूँ, थूं दंत कथा री राणी।

अेक नदी अर दोय किनारां

अेक थारो अर अेक म्हारो

काळ लगातार चालतो रेवै

मानो व्है बंजारो

कथा–पीड़ा नै जाण्यो फैरूं भी रैवती हमेस अंजाणी।

सनातनी मौसम

नित–नित आ सभा, लोगां री भीड़

घेरतो फोटूवाळां रौ समूह

आँख नै चौंधियातो तेज चांनणो

आवाज नै एन्लार्ज करतो औ माइक

इण सगळां री आदत नीं पड़ी है

आ ईसर री मेहरबानी है।

अजै तो म्हनै इचरज होवै है

कै कठै सूं फूटै ओ सबदां रौ झरणौ

कदैई अन्याय रै साम्हीं

म्हारी आवाज री आँख ऊँची होवै है

तो कदैई सबदां री शांत नदी

शांति सूं बैवती है

कदैई बैवतो है सबदां रौ बसंती वैभव

सबद अपणै आप में अरथां रै चोळा पैण लेवै हैं

सबदां रौ काफिलो चालतो रेवै है

अर म्हैं देखतो रैवूं हूँ उणरी चाल।

ईता सारा सबदां रै बिचाळै

म्हैं बचावूं हूँ आपरौ अेकांत

अर मौन रै गरभ में प्रवेस'र लेवूं हूँ

आणंद किणी सनातनी मौसम रौ।

सुपनां रा बीज

म्हैं भाठे नै भाठो हीज कैवूं हूँ

अर जळ नै जळ

म्हैं घणौ जथारथवादी मिनख हूँ

आकास नै निरखूं हूँ

अर इंदरधनुख माथै मर मिटतो हूँ

पण अपणो घर

इंदरधनुख माथै बणावूं नीं हूँ म्हैं

इंदरधनुखी रंग रा सुपनां हैं म्हारे कनै

अै सुपनां रोमांटिक नीं है

पण जीवण भर री तपस्यां रा हैं।

थारै कनै सुपनां व्है या नीं व्है

पण सुपनां रा बीज म्हैं,

आपरी धरती माथै बीजूं हूँ

अर उडीक करूं हूँ, पसीणो बहाय'र

कै बै अंकुरित व्है अर उणांरौ बिरख बणै

फैरूं किणी विराट पुरुस री गळबहियां समान

उणरी साखावां फैलै

पंखेरू उण माथै घोंसलां बणावै

अर आकास नै छुवण लागै

उणरै कंठ सूं नदी री कळ–कळ री

आवाज समान ईसरीय गीतां रै सुर

लैहरावै।

भैळप

रात रै गरभ मांय सूं निकळै दिन नै कैवो हूँ :

''आं, म्हारे कनै बैठ''

थारै प्रति आखै प्रेम सूं छळकतो हूँ म्है,

अर थारै जलम सूं हीज मनोमन राजी हूँ

म्हनै ग्यांन नीं है

कै दोनूं मांय सूं कुण किणनै पोसित'र रैयो हूँ

पण ईती समझ जरूर है

कै आपां दोनूं अेक हा।

कांटां री परवाह कियां बिना

फूल री तरै विकसाव

अर सुरभित हुवां आपां

दिन री डोळी माथै सिरफ फूल ही नीं खिळै

पंखेरूवां री आवाज भी मैकती हैं।

आवाजां रौ आकार नीं होवै,

महक री तरै

पण उणरी निराकार गति होवै है

स्थिति अर गति रौ भैळप

वौ हीज म्हारी साधना है

चालो,

आपां दोनूं,

इण साधना रै वरदान सूं

जिता जी सकां

ऊताईज जी भरनै जी ला।

मल्लाह

दरिया दिली

जिंदा दिली

लैहरां हैं

आपांरी जिंदगानी री।

तारा मंडल

चंद्र कला

आकासी गुरुजन

आपांरा मारग दरसक हैं।

समंदर में डाळी दरार

देस रै विभाजन री

कठैई है खबर

आकासी गुरुजनां नै

दीवार बिना कै दरिया में

कांई हिन्दुस्तान, कांई पाकिस्तान

सरहद पार करण री

औ तो दिन–प्रतिदिन री सजा है।

कोई आवै या नीं आवै

कोई छुड़ावै या नीं छुड़ावै

पण.....

दिल मांय तो देसभगती री ज्वाला है

समंदर में बळती अगन री तरै।

संकल्प

कदैई–कदैई उगै है

आग उगळतो सूरज,

कुनकुना–सौ दिन

थोड़ो बळूं तो हूँ।

आग उगळती चमक में

ठंडक तळ री खोज

किरणां रै तीर नै खींच

छिया–परछाईं री

भूल–भूलैया नै भेदती

विकल्पां रा काफिलां में

अकल्पनीय संकल्प पावूं हूँ।

संकल्प रौ चांनणो

संकल्प री ऊर्जा

संकल्प रौ साथ

ढळती सिंझ्या

सिंझ्या री गोधूळि रज

आज तो है

धनवान री आभा अर धनवान री सोभा

अवतार सुवारथ विहीन नीं होवै

अर लाचारी म्हारे खून में नीं।

ओळू

फरीके हल्का ओळू रा दीया

निकल्यां अंधेरे नै पीवण

अंधेरो भी ईस्यौ घनघोर

कै पीयो नीं जा सकै।

ज्यां रूंख सूं पत्ता गिरै

वियां ही उणरी ओळू फीकी होती जावै है

ओळू रौ फरीक हुणो अर्थात् कांई ?

ओळू नै भरणौ अर्थात् कांई ?

ओळू रौ दिमाग कितौ व्है ?

ओळू रै रेगिस्तान में समंदर उछळै

ओळू बैसाख–सी दोपरी

ओळू रा नाखून नीं है पण पंजा है

ओळू रा दीया बुझा डालो

ओळू रा पर काट डालो पण...

ओळू भगावण सूं भी नीं भागै

ओळू री आँख फोड़ डालो, जीभ नै काट डालो

पण.....आं होठां नै नीं सियो जा सकै

ओळू अंधेरा में भटकै है

भर आवै है कंठ म्हारो ओळू सूं

हाँ, ओळू सूं ओ जीवण रूई–सौ धुनतो है

ओळू रा अळेखू रूप अर रंग

ओळू है छिया, ओळू तो धूप

ओळू रै चलण री आवाज नीं

ओळू रौ कोई मांगलिक अवसर नीं।

ओळू रौ कांई सूर्योदय ? कांई सूर्यास्त ?

ओळू री मौत कैड़ी

ओळू री शरणागत कैड़ी

ओळू रौ नीं कोई ढ़ाँचौ

ओळू रौ कोई नीं छपरा–झोपड़ी

ओळू बैवतो झरनौ है

ओळू सूं हीज जीवण तैरे है।

हिन्दू–हिन्दू मंतर

अतर, ततर सैं ठौड़ हरमेस

हिन्दू–हिन्दू अेक मंतर

बिन्दु–बिन्दु अेक मंतर

सिन्धु–सिन्धु अेक मंतर

औ मंतर है मोती जिस्यो

अंधकार में जोत जिस्यो

आपां उजाळौ फैलावां

जग में उजाळौ फैलावां।

ऊँच–नीच रा भेद टाळ'र

आपरो सरीर पिघला'र

समाजरूपी पुरुस नै देय'र मुस्कान,

थमा'र पुरुसार्थ रा गीत,

मन में मिंदर रचावां

आपां उजाळौ फैलावां।

कोई बैरी नीं : सैं हैं मितर

हो आपरो अैड़ो चरित्र

टाळ'र प्रतिकूल संवाद नै

नूवां संवाद रचावां

आपां उजाळौ फैलावां।

अन्न, वस्त्र, संस्कार सै सुविधा अठै

व्हैलां सहज उपलब्ध

हरी व्हैलां धरा अठै

अर व्हैलां तारां सूं भर्‌यो कोई आकास

अेकता, समता अर ममता नै

आपां मैणत सूं संभाळा

आपां उजाळौ फैलावां।

ग्यारहवीं दिसा

निरभय मन

लयांवित गीत

प्राणबद्ध साफ प्रीत

सुपनां भरी मुस्कान

खुस हवा

अखंडित जळ

महकतो आकास

पळ–पळ पवितर अगन सूं करतो पुनीत

धरती स्नेहभरी सुगन्धित

परमेसर म्हारो मीत

म्हैं देखतो रैवूं हूँ, हर रोज

नीं अणागत, नीं अतीत

खाली वरतमान खिंण सूं अंकित

नीं कोई रस्म, नीं कोई रीत

नीरव मौन औ व्हैतो मुखरित

दसौं दिसावां रै उण पार

ग्यारहवीं दिसा में बजतो संगीत.....

प्रो. कल्पना पुरोहित

अध्यक्ष, अंग्रेजी–विभाग

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

एक कवियत्री एवं आलोचक के रूप में आपकी पहचान है। आपके अनेक शोध पत्र राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय पत्रिकाओं में छप चुके हैं। आपने अनेक प्रतिष्ठित रचनाओं का अनुवाद भी किया है। आपकी अनेक पुस्तकों को सराहा गया है। हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा से आपको बहुत लगाव रहा है। आपने अनेक अकादमिक एवं प्रशासनिक पदों को भी सुशोभित किया है। आपने अनेक देशों का भ्रमण किया है तथा अनेक कॉन्फ्रेस एवं सेमिनारों में शोध पत्रों का वाचन किया है। आपने उत्तर–उपनिवेशवाद, बाल साहित्य तथा भारतीय अंग्रेजी साहित्य, अमरीकी साहित्य, अफ्रीकन साहित्य आदि का तुलनात्मक अध्ययन भी किया है। अनेक पत्र–पत्रिकाओं में अंग्रेजी विषय के परामर्श–मंडल में आपकी भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है।

ई. मेल : kalpana.p1410@gmail.com

मो. 9414412918

पता– बी–50, कृष्णा नगर, न्यू पाली रोड़, जोधपुर (राज.) भारत–342005

डॉ. रणजीत सिंह चौहान

अतिथि प्राध्यापक, राजस्थानी–विभाग

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

आपने अनेक शोध कार्य किये है, जिनमें पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार री 'जूनियर फैलोशिप' प्राप्त करके 'मध्यकालीन चारणेतर साहित्य का साहित्यिक अवदान' विषय पर शोध कार्य किया तथा डॉ. एस. राधाकृष्णन, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा पोस्ट डॉक्टरोल फैलोशिप के तहत 'चौहान वंश और उससे सम्बन्धित हिन्दी एवं राजस्थानी साहित्य का अध्ययन' शोध विषय पर अनुसंधान का कार्य किया। आपने वर्द्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा में राजस्थानी पाठ्यक्रम लेखन में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। आपके अनेक शोध–पत्र विभिन्न शोध–पत्रिकाओं में छप चुके है तथा अनेक राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय संगोष्ठियों में भाग लिया है। वर्तमान में आप राजस्थानी–विभाग के अंतर्गत 'मारवाड़ रै राठौड़ राजवंस सूं सम्बन्धित राजस्थानी साहित्य : अेक अनुशीलन' विषय पर शोध कर रहे है। कुल मिलाकर शोध वृत्ति प्रकाशन में आपकी मनोवृत्ति रमण करती है।

ई. मेल : ranjeetsinghchouhan1978@gmail.com

मो. 9413681019, 9829310716